International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 25-06-2021, Accepted: 10-07-2021, Published: 26-07-2021
Volume 3, Issue 3, 2021, Page No. 42-44

हिंदी पत्रकारिता की साहित्यिक पृष्ठिका

ज्योत्स्ना आनंद
एसोसिएट प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग, रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध–आलेख का ध्येय हिंदी पत्रकारिता के अखिल भारतीय स्वरुप पर प्रकाश डालना रहा है। हिंदी पत्रकारिता के राष्ट्रीय महत्त्व का प्रतिपादन एवं भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में कवि वचन सुधा (भारतेंदु), हरिश्चंद्र मैगज़ीन (भारतेंदु), हरिश्चंद्र चन्द्रिका (भारतेंदु), हिन्दोस्तान, भारत–मित्र (प्रतापनारायण मिश्र), बंगदूत, प्रजामित्र इत्यादि पत्रों की प्रासंगिकता को रेखांकित करना शोध–आलेख का वास्तविक उद्देश्य है।

मूल शब्दः हिंदी पत्रकारिता, खड़ी बोली, साम्राज्यवाद, स्वदेशी, भारतीय राष्ट्र, स्वच्छंदतावादी

प्रस्तावना

आधुनिक हिंदी भाषा–साहित्य के अन्वेषी–अध्येताओं ने हिंदी पत्रकारिता की विकास–धारा के अनुशीलन को अपेक्षित महत्त्व नहीं दिया है। पत्रकारिता जीवन के नानाविध उलझे और निरंतर विकासमान प्रवाह को संक्षेप में सम्पुटित कर जन–जन के पास भेजने का कार्य करती है। संपूर्ण साहित्य को हिंदी पत्रकारिता ने राष्ट्रीय भूमिका दी है।

भारतीय पत्रकारिता की जन्मभूमि बंगाल है और हिंदी का पहला पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' का प्रकाशन भी सन् 1826 ई० में कलकत्ता से ही हुआ था। कलकत्ता से हिंदी के अनेक तेजस्वी पत्र प्रकाशित हुए। इन पत्रों ने आरंभिक हिंदी गद्य को पुनर्जागरणकालीन भारतीय राष्ट्र की समस्त आकांक्षाओं व संभावनाओं के समर्थ माध्यम के रूप में प्रतिष्ठित किया। प्रथम स्वतंत्रता–संग्राम (सन् 1857 ई०) के पूर्व कलकत्ते से अनेक हिंदी पत्र प्रकाशित हुए जिनमें बंगदूत, प्रजामित्र, मार्तण्ड और हिंदी के प्रथम दैनिक 'समाचार सुधावर्षण' की अभिज्ञता है और जिन्हें लक्ष्य कर पं० विष्णुदत्त शुक्ल ने 'माधुरी' में लिखा था कि 'कलकत्ते में हिंदी पत्रों के संबंध में जब इतना काम हो चुका था, तब तक दूसरे किसी स्थान पर हिंदी का एक भी समाचारपत्र प्रकाशित नहीं हो सका था।' स्वयं भाषा के स्तर पर पं० भगवद्दत्त लिखते हैं – "वर्तमान हिंदी में 15 प्रतिशत शब्द साक्षात् संस्कृत अथवा अपभ्रंश के विकार हैं।"[1]

'उदन्त मार्तण्ड' का प्रकाशन 'हिन्दुस्तानियों के हित के हेतु' अर्थात् उन्हें परावलंबन से मुक्ति दिलाकर स्वतंत्र दृष्टि प्रदान करने के निमित्त हुआ था। हिंदी पत्रकारिता के आरंभिक पुरस्कर्ताओं का आदर्श तो बड़ा था, किंतु साधन–शक्ति सीमित थी। आर्थिक कठिनाइयों के कारण 'उदन्त मार्तण्ड' का प्रकाशन बंद कर दिया गया। भारतीय पत्रकार के सामने दो कठोर मोर्चे थे। एक ओर देशवासियों की मानसिक खिन्नता थी और दूसरी ओर सरकारी दमन–नीति। इसी संक्रान्ति काल में हिंदी पत्रकारिता के दूसरे चरण का निर्माण हुआ। संक्रान्ति की चुनौती ने मानो भारतीय पत्रकारों को झकझोर कर जगा दिया था। दूसरे दौर की हिंदी पत्रकारिता की मूल विशेषता है – स्वदेशी का आग्रह। हिंदी साहित्य का यह भारतेंदु युग है अर्थात् खड़ी बोली साहित्य की नींव–निर्माण का युग। हिंदी पत्रकारिता के दूसरे दौर में अनेक तेजस्वी पत्रों का प्रकाशन हुआ। कवि वचन सुधा (भारतेंदु), हरिश्चंद्र मैगज़ीन (भारतेंदु), हरिश्चंद्र चन्द्रिका (भारतेंदु), हिन्दोस्तान, भारत–मित्र (प्रतापनारायण मिश्र) का विशेष महत्त्वपूर्ण अवदान है। इन पत्रों में साहित्य और राजनीति की प्रमुखता रहती थी। हिंदी–भाषी समाज के राजनीतिज्ञ संस्कार में इन पत्रों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इन पत्रों में प्रहसन, व्यंग्य तथा ललित निबंध छपते थे। इनका एकमात्र उद्देश्य था सामाजिक कलुष–प्रक्षालन, विदेशी शासन का प्रतिरोध व जातीय उन्नयन। कदाचित् इसीलिए सामाजिक और राजनीतिक विषयों की ओर इनका विशेष झुकाव था। भारतमित्र, सारसुधानिधि और उचित वक्ता अपनी राजनीतिक तेजस्विता के लिए अत्यंत प्रसिद्ध और सम्मानित थे। इस युग के अधिकांश तेजस्वी पत्रों के संपादक ही पत्रों के संचालक भी थे। हिंदी शब्दसागर के अनुसार– "पत्रकारिता आधुनिकता की एक विशिष्ट उपलब्धि है। पत्रकारिता का सामान्य अर्थ है– पत्रकार का काम या व्यवसाय।"[2] इस प्रकार इन पत्रों के साथ एक बड़ी इच्छा–शक्ति, 'महत् संकल्प और ऊँचा आदर्श' था। कदाचित् यही कारण है कि अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच ये पत्र खड़े हो सके और जीवंत रह सके। देश–दशा का जितना यथार्थ चित्र हम इन पत्रों में पाते हैं और ब्रिटिश सरकार की निर्मम नीतियों का उद्घाटन जिस साहस से इस समय के तेजस्वी पत्रकारों ने किया वह वस्तुतः हर दृष्टि से असाधारण महत्त्व की बात है। अपनी राज भक्ति का विज्ञापन करते हुए इन पत्रों के संपादकों ने राजकीय व्यवस्था और प्रशासकीय भ्रष्टाचार पर बड़े तीखे व्यंग्य किये। यह तेजस्वी पत्रकार भारतेंदुयुगीन हिंदी की साहित्यिक उपलब्धि हैं। इस युग के पत्रकारों में अम्बिकादत्त व्यास, रुद्रदत्त शर्मा, दुर्गा प्रसाद मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र का अवदान विशेष महत्त्वपूर्ण है। बालमुकुन्द गुप्त भी इसी युग के पत्रकार हैं जिनकी वाणी स्वदेशी आंदोलन (सन् 1905 ई०) के समय अधिक दीप्त हो उठी थी। लार्ड कर्ज़न के नाम 'भारतमित्र' के माध्यम से उन्होंने जो 'चिट्ठे' और 'खत' लिखे वैसी व्यंग्य–मुद्रा और आक्रामक भाषा निराला के निबंधों में कहीं–कहीं दिखाई पड़ती है।[3]

बीसवीं शती के साथ ही हिंदी पत्रकारिता के तीसरे चरण का जन्म होता है। 20वीं शती के आरंभिक वर्ष लार्ड कर्ज़न के कठोर शासन और नृशंसता, तिलक की उग्र राष्ट्रीयता तथा बंगभूमि से उठने वाले स्वदेशी आंदोलन आदि के लिए काफ़ी चर्चित और महत्त्वपूर्ण माने जाते रहे हैं। प्रशासन की कठोरता के साथ ही राष्ट्रीय भावना भी उग्र होती गयी। बंग–विच्छेद 20वीं शती के प्रथम दशक की सबसे बड़ी राजनीतिक दुर्घटना थी। जिस पर टिप्पणी करते हुए लोकमान्य तिलक ने लिखा था कि 'लार्ड कर्ज़न बंगालियों की संघ–भक्ति को कुचलना चाहता है। क्योंकि उसे डर है कि कहीं वे अंग्रेज़ी सरकार पर हावी न हो जाए।'

तीसरे चरण का सबसे तेजस्वी हिंदी पत्र था 'भारत मित्र'। यह राजनीति प्रधान पत्र था किंतु बालमुकुन्द गुप्त ने उसे एकांगिता से बचाया और स्वयं राजनीतिक सामग्री के साथ ही लिपि, भाषा, साहित्य, व्याकरण, धर्म, पत्रकारिता और साहित्यिक संस्मरण लिखकर 'भारत मित्र' में प्रकाशित किया और इस प्रकार उसे एक पूर्णता दी।

तृतीय चरण की हिंदी पत्रकारिता के संबंध में एक विशेष स्मरणीय बात यह है कि इसका स्वर राजभक्ति की गंध से सर्वथा मुक्त है। पूर्ववर्ती युग के पत्रकार सरकारी अनौचित्य और साम्राज्यवाद का विरोध करते समय अपनी राजभक्ति का स्मरण भी राजपुरुषों को कराते रहते थे। इस विषय में वे पूर्ण सचेत थे। वे अपनी स्थिति निरापद बनाये रखना चाहते थे, क्योंकि उनके सामने एक महत् राष्ट्रीय आदर्श था जिसे प्राप्त करने की उनमें आतुरता थी।

पं० कमलापति त्रिपाठी के अनुसार – "पत्रकार अपने जीवन में अनुभव करता है कि पत्रकारिता यदि एक ओर उसके लिए पेशा है, तो उसके लिए आदर की उत्कट साधना भी है, वह कलाकार भी है, व्यवसायी भी, वह कारीगर भी है, कलाकार भी, विभिन्न स्थितियों में उसे आवश्यकतानुसार कार्य करना आवश्यक होता है और यदा–कदा एक साथ ही सब पदों के कर्त्तव्य की पूर्ति भी करनी पड़ती है।"

बीसवीं शताब्दी की हिंदी पत्रकारिता साहित्यिक–सांस्कृतिक आंदोलनों का माध्यम बनी जैसे पूर्ववर्ती युग की पत्रकारिता राजनीतिक चेतना को दिशा–दृष्टि देती रही है। यद्यपि राजनीतिक घटना और स्थिति से सर्वथा असंपृक्त होना उस उग्र राष्ट्रीय आंदोलन के युग में संभव न था तथापि शुद्ध साहित्यिक–पत्रकारिता का युग 20वीं शती से आरंभ होता है।

इस शताब्दी के प्रथम दशक की सर्वाधिक चर्चित साहित्यिक पत्रिका 'सरस्वती' है। इसका प्रकाशन काशी, नागरी प्रचारिणी सभा के तत्त्वावधान में इलाहाबाद से हुआ था। इसके आरंभिक संपादक बाबू श्याम सुंदर दास, बाबू राधाकृष्ण दास, जगन्नाथ दास रत्नाकर, कार्तिक प्रसाद खत्री और पं० किशोरी लाल गोस्वामी थे। सन् 1903 में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इसके संपादन का दायित्व संभाला। द्विवेदी जी के प्रवेश के साथ ही इस पत्रिका में एक विशेष प्रकार के आदर्श का प्रवेश हुआ ओर एक साहित्य–पीढ़ी के निर्माण–संस्कार में इन्होंने ऐतिहासिक भूमिका प्रस्तुत की। सन् 1905 ई० से इस पत्रिका पर से नागरी प्रचारिणी सभा का नाम हट गया। द्विवेदी जी सन् 1920 ई० तक इसके संपादक रहे। 'सरस्वती' में किसी का छपना साधारण बात नहीं थी। संपादकीय कलम के स्पर्श के बिना उसमें छपना कठिन था और जिस पर द्विवेदी जी की कलम चल जाती थी उसे उस युग के साहित्यिक आदर्श का संस्पर्श मिल जाता था। 'द्विवेदीकाल' का अधिकांश साहित्य 'सरस्वती' में प्रकाशित हुआ।

सन् 1909 ई० में जयशंकर प्रसाद की प्रेरणा से 'इन्दु' पत्रिका का प्रकाशन हुआ था। इसके संपादक पं० रूपनारायण पाण्डेय थे जो स्वच्छंद काव्यधारा के पुरस्कर्ता और विचारक थे। इस पत्रिका ने उस स्वर को प्रस्तुत किया जो द्विवेदी जी के सैद्धांतिक आग्रह के चलते 'सरस्वती' में नहीं प्रकाशित हो सका था। 'इन्दु' के प्रकाश में साहित्य की नई दिशा की सूचना थी। यह नई दिशा स्वच्छंद साहित्य की दिशा थी जिसे 'मतवाला' ने अधिक आलोकित किया। 'मतवाला' हिंदी पत्रकारिता की वह महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है जिसने हिंदी के सर्वश्रेष्ठ स्वच्छंदतावादी कवि निराला को शीर्ष महत्त्व के साथ प्रस्तुत किया। हिंदी के स्वच्छंदतावादी साहित्यिक–आंदोलन में 'मतवाला' की विशिष्ट भूमिका रही है। उसके विज्ञप्त संपादक महादेव प्रसाद सेठ थे किंतु वास्तविक संपादक सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, शिवपूजन सहाय और पांडेय बेचन शर्मा उग्र थे। अधिकांश अंक के मुख्य पृष्ठ पर निराला की कविता छपती थी। इस प्रकार निराला के पूर्ववर्ती काव्य के प्रकाशन का अधिकांश श्रेय 'मतवाला' को ही है।

साहित्य पत्रिकाओं में 'माधुरी' का ऐतिहासिक महत्त्व है। इसका प्रकाशन लखनऊ से हुआ। हिंदी के यशस्वी लेखकों ने इसका संपादन किया। संपादक के रूप में दुलारेलाल भार्गव का नाम इसमें वैसे ही छपता था जैसे 'मतवाला' में महादेव प्रसाद सेठ का। इसके वास्तविक संपादक पं० रूपनारायण पाण्डेय, कृष्णबिहारी मिश्र और प्रेमचंद थे। बाद में शिवपूजन सहाय और द्विवेदी जी भी 'माधुरी' के संपादकीय विभाग में आ गए। यह पत्रिका किसी सैद्धांतिक आग्रह–दुराग्रह से चालित नहीं थी। अपने समय की नई और सही साहित्य–धारा को अग्रसर करना ही इसका उद्देश्य था।

प्रेमचंद जी के 'हंस' की भूमिका भी इसी स्तर की रही है। इसका प्रकाशन सन् 1930 ई० में काशी से हुआ था। इसका नामकरण प्रसाद जी ने किया था। 'हंस' के आरंभिक अंकों में प्रसाद की कविताएँ प्रकाशित हुई हैं। 'कामायनी' के अंश अनेक अंकों के मुख्य पृष्ठ पर प्रकाशित हुए हैं। परंतु 'हंस' की दृष्टि सामयिकता और युगीन चेतना की ओर ही थी। वर्तमान के प्रति 'हंस' का आग्रह इतना प्रबल था कि प्रसाद जी के अतीत–प्रेम पर प्रेमचंद ने 'हंस' के माध्यम से कड़ा प्रहार किया था। ऐतिहासिक इतिवृत्त पर आधारित प्रसाद के नाटक को 'गड़े मुर्दे उखाड़ना' कहकर प्रेमचंद ने उनके कृतित्व पर प्रश्न–चिह्न लगाया था। 'हंस' उस जन–संस्कृति का उन्नायक पत्र था जो एक ओर गांधी जी के स्वराज्य आंदोलन और दूसरी ओर प्रेमचंद की कृतियों द्वारा प्रवर्द्धित और पुष्ट हो रहा था।

'हंस' के प्रकाशन के दो वर्ष पूर्व कलकत्ता से सन् 1928 ई० में बनारसी दास चतुर्वेदी के संपादन में 'विशाल भारत' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन हुआ था। 'विशाल भारत' के संचालक महान मनीषी पत्रकार रामानंद चट्टोपाध्याय थे। चतुर्वेदी जी ने लिखा है कि 'बड़े बाबू ने इस उद्देश्य से 'विशाल भारत' निकाला था कि हिंदी जनता तक शुद्ध सात्विक, मानसिक भोजन पहुँचे।' इस उद्देश्य के प्रति 'विशाल भारत' सदैव सजग रहा। पं० बनरसी दास चतुर्वेदी ने इसके माध्यम से कई साहित्यिक विवाद उठाये थे। 'उग्र' के कथा–साहित्य पर उन्होंने

अश्लीलता का आरोप लगाया था, निराला जी के 'वर्तमान धर्म' शीर्षक निबंध पर गंभीर शंकाएँ खड़ी की थीं जिनको लेकर हिंदी साहित्यिकों में काफ़ी विवाद हुआ।

गांधी युग के दो और पत्र काफ़ी प्रसिद्ध थे, जिनमें एक था 'मौजी' और दूसरा 'आदर्श'। दोनों के संपादक हिंदी के विशिष्ट गद्यकार बाबू शिवपूजन सहाय थे। 'मौजी' में द्विवेदी जी भी कुछ दिनों तक रहे। आदर्श में निराला जी की भी कविताएँ छपती थीं। 'आदर्श' के दूसरे अंक में 'जूही की कली' प्रकाशित हुई थी। निराला जी की देख–रेख में रामकृष्ण मिशन से 'समन्वय' नामक अध्यात्मिक पत्रिका इसी युग में कलकत्ता से प्रकाशित हुई थी। 'समन्वय' को मुंशी नवजादिक लाल और बाबू शिवपूजन सहाय ने भी संपादित किया था। कलकत्ता से प्रकाशित होने वाले इस युग के दूसरे प्रसिद्ध पत्र हैं – 'हिंदूपंच' और 'सेनापति', जिनके माध्यम से उग्र हिंदू राष्ट्रवाद मुखर हुआ।

'हंस' के बाद जिन पत्रिकाओं से साहित्य की उल्लेखनीय श्रीवृद्धि हुई है और विशेष चर्चित रही हैं, उनमें प्रमुख हैं – चाँद, सुधा, मनोरमा, मर्यादा, हिमालय, आलोचना, प्रतीक, अवन्तिका, नया समाज, कल्पना, ज्ञानोदय, राष्ट्रवाणी, आजकल, बहुधा और धर्मयुग।

शोध और अनुशीलन की सबसे पुरानी पत्रिका काशी, नागरी प्रचारिणी सभा की 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' है। साहित्य के साथ अन्य प्राच्य विधा की शोध–सामग्री को हिंदी भाषा में इसी पत्रिका में प्रस्तुत किया। इस परंपरा की और भी शोध पत्रिकाएँ बाद में प्रकाशित हुईं जिसमें प्राचीन भारत, सम्मेलन पत्रिका, हिंदी अनुशीलन, त्रैमासिक साहित्य प्रमुख हैं। सांस्कृतिक उन्नयन में कलकत्ते की 'देवनागर' की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इस पत्रिका का विज्ञप्त उद्देश्य था देवनागरी लिपि का प्रचार और उन्नयन, किंतु इसका प्रच्छन्न उद्देश्य था देश की सांस्कृतिक और भावात्मक एकता को पुष्ट करना।

20वीं शती में राजनीतिक और साहित्यिक पत्रकारिता अलग–अलग होकर चलीं। सन् 1907 में शुद्ध राजनीतिक मासिक पत्रिका कलकत्ते से प्रकाशित हुई थी – 'नृसिंह', जिसके संपादक व संचालक अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी थे। परवर्ती काल में दैनिक पत्रों में राजनीतिक पत्रकारिता सिमट गयी। प्रताप अभ्युदय, कर्मवीर, संघर्ष, जीवन–साहित्य, जन–भूदान, जनयुग, मुक्तधारा विभिन्न राजनीतिक दलों और विचारों को लेकर चलने वाली पत्र–पत्रिकाएँ हैं। 20वीं शती के राजनीतिक पत्रकारों में मदनमोहन मालवीय, माधवराव सप्रे, माखनलाल चतुर्वेदी, पुरुषोत्तमदास टंडन, संपूर्णानंद, आ० नरेन्द्र देव, राम मनोहर लोहिया और श्री कमलापति त्रिपाठी प्रमुख हैं। इनमें से कुछ को छोड़कर अधिकांश राजनीतिक पुरुष हैं। साहित्य के उन्नयन और समृद्धि में जिन दैनिक पत्रों का महत्त्वपूर्ण योग रहा है उनमें प्रताप और भारत विशिष्ट हैं।

धार्मिक साहित्य प्रस्तुत करने वाली भी अनेक पत्रिकाएँ हिंदी में प्रकाशित हुई हैं, विशेषतः जैन धर्म संबंधी। किंतु हिंदी साहित्य की समृद्धि में जिस धार्मिक पत्रिका का सबसे महत्त्वपूर्ण अवदान है वह श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार की पत्रिका 'कल्याण' है जिसका वार्षिक विशेषांक अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है। इस पत्रिका में अधिकारी विद्वानों के लेख प्रकाशित होते हैं। भारतीय विद्या भवन की पत्रिका 'भारती' भी अध्यात्म विधायक पत्रिका थी। सूर्योदयी कविता का आंदोलन इस पत्रिका ने शुरू किया था। इस प्रकार 'भारती' की एक साहित्यिक भूमिका भी रही है। विविध रूप–दृष्टि और विचारधाराओं की पत्रिकाओं के प्रकाशन से हिंदी पत्रकारिता में विविधता आयी है और इससे हिंदी भाषा–साहित्य समृद्ध हुआ है।

जिस वर्ष भारत को राजनीतिक स्वाधीनता मिली उसी वर्ष (सन् 1947) अज्ञेय की द्वैमासिक पत्रिका 'प्रतीक' प्रकाशित हुई। जैसे 'हंस' के साथ एक साहित्यिक आंदोलन का इतिहास जुड़ा है वैसे 'प्रतीक' के द्वारा भी एक साहित्यिक आंदोलन का सूत्रपात हुआ। यह हिंदी में नव लेखन का आंदोलन था।

'आलोचना' अपने जन्मकाल से ही समीक्षा की श्रेष्ठ पत्रिका रही है। इसका संपादन आरंभ से ही पुरानी–नयी पीढ़ी के प्रमुख समीक्षकों ने किया है। हिंदी आलोचना की समृद्धि में निर्विवाद रूप से 'आलोचना' का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अवदान रहा है। 'साहित्य–संदेश' भी आलोचना की पत्रिका थी जो परीक्षार्थियों के लिए महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुई। डॉ० रामविलास शर्मा के 'समालोचक' का स्तर अपेक्षाकृत अधिक साहित्यिक था। दुर्भाग्य से यह पत्रिका अधिक दिन नहीं चल सकी।

इस संदर्भ में रामधारी सिंह 'दिनकर' ने लिखा था – "कोई भी श्रेष्ठ रचना तभी सफल हो सकती है जबकि उसमें कहा गया तत्त्व पाठक की चेतना में सीधे प्रविष्ट कर जाए।"[4]

'क ख ग' नव चिंतन की अप्रतिम पत्रिका थी। वह शुद्ध साहित्यिकों का आयोजन था जिसके संयोजक डॉ० रघुवंश थे। शुद्ध साहित्यिक सहयोग के बल पर निकलने वाली यह पत्रिका दीर्घजीवी न हो सकी।

हिंदी पत्रकारिता के संबंध में यह तथ्य स्मरणीय है कि प्रायः सभी प्रमुख साहित्यकारों का संबंध एक न एक पत्रिका से रहा है। साहित्यिक आंदोलन उन पत्रिकाओं द्वारा आविर्भूत हुए जो विशिष्ट साहित्यकारों के संपादन में निकल रही थीं। हंस, मतवाला और प्रतीक द्वारा प्रेमचंद, निराला और अज्ञेय जैसे लेखकों ने आधुनिक हिंदी साहित्य को यथासमय नयी दिशा दी है। हिंदी गद्य शैली के अप्रतिम उन्नायक शिवपूजन सहाय और रामवृक्ष बेनीपुरी ने अनेकानेक पत्रिकाओं का संपादन किया था। ये दोनों गद्यकार मूलतः साहित्यकार और पेशे से पत्रकार थे। आज के पत्रकारों में निष्ठा की कमी साधना–विरति और युग चेतना के प्रति एक विचित्र प्रकार की उदासीनता दिखाई पड़ती है।

निष्कर्ष

पराधीनता काल के पत्रकारों, लेखकों और चिंतकों की परिस्थिति बहुत जटिल थी परंतु उनकी निष्ठा इतनी बलवती थी कि भयंकर प्रतिकूलता के बीच उन्होंने अपने महत् दायित्व का निर्वाह किया। आज उसी निष्ठा और आस्था की आवश्यकता है जो हमें निषेध–नकार के स्थान पर कर्म–रुचि और प्रेरणा दे सके जिससे परवर्ती पीढ़ी को हम उर्वर परंपरा सौंप सकें।

संदर्भ सूची

1. भाषा का इतिहासः पं० भगवद्दत्तः संस्करण 2012, इतिहास प्रकाशन मण्डल, दिल्ली, पृष्ठ–259
2. मानक हिंदी कोश (भाग–3), पृष्ठ–380
3. पत्र और पत्रकारः पं० कमलापति त्रिपाठी, पृष्ठ–168
4. पत्रकारिता का अवलोकनः एन० सी० पंतः राधा पब्लिकेशन्सः संस्करणः 2007, पृष्ठ–100